ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

# भारत में लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका

** Sarita Vishwakarma*

* *Assistant Professor, Rahul College of Education*

**घोषवारा:**

*लैंगिक समानता का अर्थ है कि सभी लिंग के लोगों को समान अवसर, अधिकार और जिम्मेदारियाँ प्राप्त हों। भारत में लैंगिक समानता एक मानव अधिकार है और लोगो तक लैंगिक समानता का अर्थ समझाने के लिए शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा रोजगार के अवसर बढ़ाती है, बेहतर स्वास्थ्य बनाने की जानकारी बताती है और समाज के हर लिंग को उनके अधिकारों के बारे में सशक्त बनाती है। वैश्विक लिंग अंतर सूचकांक के अनुसार, भारत 2021 में, 156 देशों में 140 वें स्थान पर था। इस सूचकांक से पता चलता है कि लैंगिक समानता में भारत की स्थिति अच्छी नहीं है। यह अध्ययन बताता है कि लैंगिक समानता के लिए शिक्षा क्यों महत्वपूर्ण है, यह अध्ययन भारतीय संविधान में लैंगिक समानता के लिए बनाए गए कानूनों पर प्रकाश डालता है और भारत सरकार के उन कार्यक्रमों का परिचय देता है जो महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए चलाए जा रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि शिक्षा के माध्यम से किन्नर वर्ग कैसे वंचित और पिछड़े वर्ग से बाहर निकल रहे हैं। अध्ययन में विश्लेषण किया गया कि लिंग विकास के लिए शिक्षा सबसे शक्तिशाली उपकरण है और शिक्षा बेहतर समाज के निर्माण में मदद करती है।*

**संकेत सूचि :** *मानव अधिकार, महिला सशक्तिकरण, वैश्विक लिंग अंतर सूचकांक, लैंगिक समानता*

**Copyright © 2024 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial Use Provided the Original Author and Source Are Credited.

**प्रस्तावना:**

यदि हम भारत का सतत , समावेशी विकास और शांतिपूर्ण विश्व चाहते हैं तो लैंगिक समानता अनिवार्य है। क्योंकि जब तक समाज का कुछ वर्ग दरिद्रता, कुंठा, अशिक्षा, सामाजिक पिछड़ेपन का शिकार रहेगा,तब तक हम भारत के पूर्ण विकास की कल्पना भी नहीं कर सकते। लैंगिक समानता का तात्पर्य एक ऐसे समाज से है जहाँ सभी लिंग के लोग जीवन के सभी क्षेत्रों में समान अवसरों, परिणामों, अधिकारों और दायित्वों का आनंद लें रहे हो। लैंगिक समानता के बिना हम प्रकृति के बीच संतुलन नहीं ला सकते। 'महिला सशक्तिकरण' शब्द आजकल बहुत चर्चा में है। सरकार ने महिला सशक्तिकरण के लिए तीन तलाक का फैसला, सबरीमाला मंदिर में प्रवेश की इजाजत समेत कई अन्य कदम भी उठाए। अब 'अबला' और 'कमजोर' जैसे शब्द महिलाओं के लिए नहीं हैं। इतिहास साक्षी है कि भगवान राम ने रावण का वध करने के लिए पहले भगवती भवानी की आराधना की थी। वैश्विक लिंग अंतर दस्तावेज के अनुसार, भारत 156 देशों में ,28वें स्थान से गिरकर 140 वें स्थान पर है।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

इस अंतर को चार आयामों के आधार पर मापा जाता है- आर्थिक भागीदारी और अवसर, शैक्षिक प्राप्ति, स्वास्थ्य और अस्तित्व और राजनीतिक सशक्तिकरण। भारत ने स्वास्थ्य और उत्तरजीविता सूचकांक में सबसे खराब प्रदर्शन करते हुए 156 देशों में 155वां स्थान प्राप्त किया है। इस क्षेत्र में काम करने की बहुत आवश्यकता है शिक्षा उपलब्धि सूचकांक में भी भारत की स्थिति अच्छी नहीं है।

**उद्देश्य:**

1. लैंगिक समानता में शिक्षा के महत्व को जानना
2. महिला सशक्तिकरण में शिक्षा के महत्व को पहचानना
3. शिक्षा के कारण किन्नर व्यक्ति के जीवन में आए बदलाव को जानना
4. लैंगिक समानता के लिए संविधान में कल्याणकारी योजनाओं और प्रावधानों को मान्यता देना

**अनुसंधान प्रणाली:**

इस लेख को लिखने के लिए शोध लेख, समाचार पत्र, रिपोर्ट और विभिन्न वेबसाइटों का उपयोग किया जाता है। यह अध्ययन गुणात्मक विधि से किया गया है ।

**लैंगिक समानता में शिक्षा का महत्व:**

शिक्षा असमानता को कम करने और विकास का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होती है। जिस प्रकार शरीर के विकास के लिए भोजन आवश्यक है उसी प्रकार शिक्षा मस्तिष्क को पोषण प्रदान करती है। कलम की ताकत तलवार की ताकत से कहीं अधिक है। शिक्षा आर्थिक सशक्तिकरण प्रदान करती है। लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा से मातृ स्वास्थ्य में सुधार, शिशु मृत्यु दर में कमी और कई अन्य समस्याओं में व्यापक लाभ हो सकते हैं। शिक्षा महिलाओं के लिए वेतन और नौकरियों में सुधार करती है, महिलाओं को स्वस्थ बनाती है, महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने के लिए सशक्त बनाती है, लड़कियों को हानिकारक प्रथाओं से बचाती है और शिक्षा की रूढ़िवादिता को चुनौती देती है। आज भारत में महिलाएं कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत हैं। इसका श्रेय शिक्षा को ही जाता है। आजकल भारतीय महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं और राजनीति, कला, विज्ञान और कानून आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियां हासिल कर रही हैं। कुछ भारतीय महिलाओं के नाम इस प्रकार हैं, जो महिला सशक्तिकरण का उदाहरण है ,हमारी वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन, इंदिरा नूयी, अनुंधति रॉय, मैरी कॉम, किरण बेदी, गीता गोपीनाथन और कई अन्य।

स्त्री और पुरुष एक ही रथ के दो पहिए हैं। शिक्षा न केवल महिलाओं को बल्कि पुरुषों को भी समझ के मामले में सशक्त बनाती है। एक शिक्षित पुरुष कामकाजी महिला का सम्मान करता है और महिला के कंधों पर पड़ने वाले दोहरे भार को समझता है।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

लैंगिक समानता में बड़ी बाधा यह है कि कुछ पुरुष महिला शिक्षा के पक्ष में नहीं हैं। उनका विचार था कि स्त्रियों का जन्म केवल घरेलू कार्य के लिये ही होता है। इसलिए पुरुष आबादी की सहमति, मानसिकता और भागीदारी के बिना पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना असंभव है। अब वास्तविक शिक्षा की आवश्यकता है जो एक-दूसरे के लिए पारस्परिक सम्मान और समझ विकसित करने में मदद कर सके और हिंसा और भेदभाव को कम कर सके। शिक्षा महिलाओं पर होने वाले अपराधों जैसे एसिड फेंकना, बलात्कार, यौन उत्पीड़न और कई अन्य से निपटने में मदद करती है। किन्नर लोग पारंपरिक रूप से समाज द्वारा हाशिए पर रखे गए हैं और उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। शिक्षा कलंक, भेदभाव से मुक्ति दिलाती है और उन्हें सामाजिक समावेश की ओर ले जाती है। शिक्षा भारतीय समाज के कमजोर वर्गों के लिए प्रकाश, आशा है। विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट के अनुसार संयुक्त राष्ट्र की विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2021 में भारत को 149 देशों में से 139 वां स्थान मिला है। यह रैंक दर्शाती है कि प्रसन्नता सूचकांक में भारत की दयनीय स्थिति है। यह दस्तावेज इस बात पर केंद्रित है कि उनके नागरिक कितने खुश हैं। एक खुशहाल देश के लिए भारत को लैंगिक समानता पर और अधिक काम करना होगा। भारत एक खुशहाल देश बन सकता है यदि इस देश का प्रत्येक नागरिक खुश हो और निडर होकर, भेदभाव और हिंसा के बिना रह सके।

**कोविड 19 के दौरान महिलाओं की भूमिका:**

कोविड 19 के दौरान जब सब कुछ बंद था, महिलाओं के लिए कोई छूट नहीं थी। घरेलू काम के लिए उनका कार्य 24 घंटे लगातार जारी रहता था। कोविड-19 काल में महिलाओं की कार्यप्रणाली और अधिक बढ़ गई। विद्यालय बंद होने के कारण उन्हें अपने बच्चों को अतिरिक्त समय देना पड़ता था , परिवार की देखभाल और साफ-सफाई में अधिक समय लगता था । लेकिन इस कार्य को कम महत्व दिया गया और अदृश्य रखा गया , इसके बावजूद इस समयावधि में घरेलू हिंसा और शोषण से संबंधित घटनाओं में वृद्धि हुई है जो शर्मनाक है। इस हिंसा के पीछे आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी की हताशा और घर के भीतर अंतहीन कारावास है।

कोरोना के प्रकोप के दौरान महिलाएं उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं। महिलाएं स्वास्थ्य कर्मियों, देखभाल करने वालों, नवप्रवर्तकों, सामुदायिक आयोजकों और महामारी से निपटने में सबसे प्रभावी राष्ट्रीय नेताओं में से कुछ के रूप में अग्रिम पंक्ति में खड़ी थीं। "यह देखने योग्य है कि पुरुषों के नेतृत्व वाले देशों के परिणामों की तुलना में महिला नेताओं द्वारा कोविड महामारी के लिए नीति प्रतिक्रिया रणनीतियाँ अधिक अनुकूल थीं।" इस वर्ष यह दिन दुनिया भर में महिलाओं द्वारा अधिक समान भविष्य को आकार देने और कोविड-19 महामारी से उबरने के जबरदस्त प्रयासों के लिए मनाया जाता है।

**महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व:**

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

महिलाएं लगभग आधी आबादी में अपना योगदान करती हैं। लैंगिक असमानता को कम करने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं की असमानता और असुरक्षा जारी है। शिक्षा को महिला सशक्तिकरण के लिए एक मील का पत्थर माना जाता है क्योंकि यह उन्हें चुनौतियों का जवाब देने, अपनी पारंपरिक भूमिका का सामना करने और अपने जीवन को बदलने में सक्षम बनाता है।

भारत में पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने में शिक्षा ने अग्रणी भूमिका निभाई है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में महिला साक्षरता दर 64.63% है। भारत की साक्षरता स्थिति में वृद्धि हुई है लेकिन इसमें और सुधार की आवश्यकता है।

**भारत में लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका:**

सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2020 के अनुसार चौथा लक्ष्य समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना है। भारतीय संविधान भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक को समानता प्रदान करता है और धर्म, नस्ल, जाति लिंग और जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का विरोध करता है। भारतीय संविधान में प्रावधान के बावजूद, लैंगिक समानता के दृष्टिकोण से भारत की स्थिति अच्छी नहीं है।

1. भारतीय समाज में अभी भी कुछ बुराइयाँ मौजूद हैं जैसे दहेज, बाल विवाह, बेटे की चाहत इत्यादि । ये लैंगिक समानता नीतियों और नियमों को लागू करने में बड़ी बाधाएँ हैं।
2. लड़कियों को अभी भी विद्यालय जाने से रोका जाता है।
3. भारतीय महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं हैं। बांझपन, तनाव, हार्मोन असंतुलन, पोषण की कमी भारतीय महिलाओं की आम समस्याएं हैं।
4. यह पुरुषों और महिलाओं के बीच मौजूद आर्थिक भेदभाव है। महिलाओं द्वारा किए गए काम को कम महत्व दिया जाता है और अधिकांश महिलाओं को समान काम के लिए समान भुगतान नहीं किया जाता है।
5. महिलाएं घरेलू हिंसा की शिकार हैं।
6. महिलाओं पर दोहरी जिम्मेदारी है. वे घरेलू प्रबंधक हैं और वे बाहर के काम में भी योगदान देते हैं। इसके अलावा, कुछ महिलाओं की घर के अंदर और घर के बाहर अभी भी दयनीय स्थिति है।

**भारत में किन्नरों की शिक्षा की स्थिति:**

किन्नर लोग वे होते हैं जिनकी लिंग पहचान उस लिंग से भिन्न होती है जो उन्हें जन्म के समय माना जाता था। हमारी भारतीय संस्कृति में हर शुभ कार्य में किन्नरों को शुभ माना जाता है। इनका वर्णन रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन महाकाव्यों में

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

भी मिलता है। लेकिन यह एक कड़वी सच्चाई है कि हमारे भारतीय समाज में उनके साथ 'हिजड़ों' के आधार पर ही व्यवहार किया जाता है। इन्हें हास्य पात्र माना जाता है। उनके लिए अभद्र भाषा का प्रयोग किया जाता है. उन्हें समान दर्जा नहीं दिया जाता है और यहां तक कि समाज द्वारा भी स्वीकार नहीं किया जाता है। "सामाजिक व्यवहार और कभी-कभी समाज की जबरदस्ती के कारण, उन्हें भीख मांगने और यौन कार्य में जाना पड़ता है"। हमारे संविधान में भारत के प्रत्येक नागरिक को समानता का अधिकार है।

अनुच्छेद 14 के अनुसार राज्य भारत के किसी भी व्यक्ति को कानूनों के समक्ष समानता और कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा। किन्नर व्यक्तियों के अधिकार संरक्षण विधेयक 2019 में पारित किया गया था। विधेयक किन्नर के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक सशक्तिकरण के लिए एक तंत्र प्रदान करना चाहता है। यह विधेयक एक किन्नर व्यक्ति के खिलाफ भेदभाव पर रोक लगाता है, जिसमें शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवा, निवास के अधिकार आदि के संबंध में सेवा से इनकार या अनुचित व्यवहार शामिल है। इन सरकारी प्रयासों के साथ-साथ किन्नर व्यक्ति को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होना चाहिए। जागरूकता के लिए शिक्षा की आवश्यकता है . शिक्षा ही वह माध्यम है जो उनके अस्तित्व को पहचान सकती है और उनके जीवन के अंधकार को कम या खत्म कर सकती है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश में किन्नर लगभग 4.9 लाख हैं और साक्षरता दर 57.06% है। भारत में ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में अपनी पहचान बनाई है और भारत का नाम रोशन किया है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं: के. पृथिका यशिनी तमिलनाडु की पहली किन्नर पुलिस अधिकारी हैं और उन्होंने किन्नर के रूप में पहचान बनाने के लिए कानूनी लड़ाई लड़ी। मानबी बंदोपाध्याय पहली किन्नर प्रोफेसर हैं और बंगाली साहित्य में पीएचडी हासिल करने वाली पहली किन्नर हैं। इसके अलावा, कई किन्नर लोग स्कूल जाना चाहते हैं लेकिन उन्हें उत्पीड़न और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। यह किन्नर व्यक्तियों के विकास में सबसे बड़ा डर और बाधा है और यह भारत में लैंगिक असमानता पैदा करता है।

**लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा योजनाएं भारत वह देश है जहां लड़कियों को देवी के रूप में पूजा जाता है और यहां की भूमि को भारत माता कहा जाता है। भारत सरकार महिलाओं को शिक्षित और सशक्त बनाने के लिए कई योजनाएं चलाती है।**

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना
2. उड़ान योजना
3. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना
4. वन स्टॉप सेंटर योजना

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

5. नारी शक्ति पुरस्कार
6. ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं और बच्चों का विकास
7. महतारी वंदन योजना
8. फ्री सिलाई मशीन योजना
9. फ्री आटा चक्की वितरण योजना
10. लाडली बहना योजना
11. नारी सम्मान योजना
12. प्रधान मंत्री मातृत्व वन्दना योजना
13. आंगनबाड़ी लाभार्थी योजना
14. मुख्य मंत्री सामूहिक विवाह योजना
15. प्रधान मंत्री समर्थ योजना

इन योजनाओं का उद्देश्य बालिकाओं को शिक्षित करना, बालिकाओं को उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, महिलाओं को रक्षात्मक माहौल प्रदान करना, समग्र सेवाएं प्रदान करना, आर्थिक रूप से समर्थन करना, महिला सशक्तिकरण के लिए महान योगदान देने वाली महिलाओं को पहचानना है।

**सुझाव:**

- जो विवाहित महिलाएं बाहर काम करने में सक्षम नहीं हैं। उनके रोजगार के लिए कोई कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए।
- सरकार को समाज के हर लिंग - महिलाओं, पुरुषों और किन्नर लोगों के साक्षरता स्तर को बढ़ाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- समावेशन के लिए शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षक को किन्नर लोगों को शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए और उनके लिए अनुकूल माहौल तैयार करना चाहिए।
- लड़कियों और किन्नर लोगों को पढ़ाई के लिए प्रेरित करने के लिए अधिक छात्रवृत्ति कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए।

ISSN: P-2455-0515
E- 2394-8450

Educreator Research Journal

OPEN ACCESS

VOLUME–XI, ISSUE– II

MARCH – APRIL 2024

Original Research Article

**निष्कर्ष:**

"अगर हम इस दुनिया में वास्तविक शांति पाना चाहते हैं, तो हमें बच्चों को शिक्षा देने की आवश्यकता है "महात्मा गांधी, समाज के कुछ वर्गों के प्रभुत्व के कारण लैंगिक समानता का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकता है। इस समय भारत की पुरुष आबादी भी महिला शिक्षा के समर्थन में आगे आ रही है। उन्हें 'अर्धनारीश्वर' की अवधारणा को महसूस करना चाहिए। सरकारी कल्याणकारी योजनाओं को सही ढंग से लागू किया जाए तो महिलाओं की स्थिति में सुधार किया जा सकता है। महिलाओं के बारे में हास्यास्पद सोच रखने वाले लोगों के मुंह पर ताला लगाने का एकमात्र तरीका शिक्षा है। शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम है जिसके माध्यम से भारतीय महिलाओं को सामाजिक पहचान मिलती है। संविधान का अनुच्छेद 21 सभी व्यक्तियों को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की गारंटी देता है। अनुच्छेद 21[ए] सुनिश्चित करता है कि शिक्षा प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए एक मौलिक अधिकार है। बावजूद इसके कि किन्नर व्यक्ति को समाज में भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। इस स्थिति का एकमात्र उपाय शिक्षा ही है। 21वीं सदी में लैंगिक समानता के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण हथियार है।

***Cite This Article:***

***Vishwakarma S. (2024).*** *भारत में लैंगिक समानता में शिक्षा की भूमिका.* In Educreator Research Journal: Vol. XI (Number II, pp. 309–315). **ERJ.** *https://doi.org/10.5281/zenodo.10911968*